कलीसियाओं को एक आव्हान

संविधान दिवस मनाएं

26 नवम्बर 2017 को (रविवार)

आराधना विधि

अपने संविधान का पर्व मनाते हुए

अगुवा: आज से 68 वर्ष पहले 26 नवम्बर 1949 को संविधान सभा द्वारा भारत के संविधान को स्वीकृत किया गया था .और आज समय आ गया है कि परमेश्वर के विश्वासी समुदाय के रूप में हम प्रभु परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने यह ठहराया कि हम न केवल अंग्रेज़ों की गुलामी से आज़ाद हो सके, लेकिन अपने खुद के मुखियाओं ने हमें एक संविधान ड्राफ्ट कर दिया जिसके ज़रिये हम स्वंत्रता, समानता और सम्मान का जीवन जी सकें.

लोग: परमेश्वर की महिमा करें जिससे हमें सारी आशीषें मिलती हैं, इस पृथ्वी के सभी जीव-जंतु उसकी महिमा करें, स्वर्ग और आकाश में सभी विचरण करने वाले उसकी महिमा करें, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा हो.

हे इतिहास, संस्कृति और सभ्यता के परमेश्वर, आपका हार्दिक धन्यवाद करने के लिए हमारे पास उचित शब्द नहीं हैं, जब हम अपनी भारत भूमि के उन अगुवों और लोगों को याद करते हैं जिन्होंने हमारे संविधान को मूर्त रूप देने में अथक प्रयास किया जिसके माध्यम से आज हमारा मार्गदर्शन होता है, हमें शासित किया जाता है, और एक राष्ट्र के रूप में दिशा, दर्शन और दृष्टि प्राप्त होती है. वह एक महान दिवस था जब हमने अपने संविधान को स्वीकारा ताकि हम उसमें निहित मूल्यों और सिद्धांतों पर आधारित अपने सपनों, आशाओं और आकान्शाओं के भारत का निर्माण कर सकें.

सभी मिलकर: जय भारत!

अगुवा: इस मन्त्र का हम सब मिलकर उच्चारण करें.

मंत्रुच्चरण: क्रिश्तम सरनम गच्छामी
त्रि-येश्वर सरनम गच्छामी
परिशुध्धात्मा सरनम गच्छामी
(इस समय एक दिया जलाया जाये)

अगुवा: हम परमेश्वर के धन्यवादी हैं की उसने हमें गांधी, नेहरु, पटेल, आज़ाद जैसे महान नेता दिए जिनके अथक प्रयासों और कर्मठ योगदान से हम भारत के लोगों के लिए ऐसी परिस्थिति निर्मित की जिसमें हम न केवल स्वतंत्र नागरिक और प्रभुत्व्सम्पन्न राष्ट्र होकर जीवन जी सकते हैं, लेकिन डॉ. आंबेडकर जैसे मार्गदर्शक भी दिए जिन्होंने निष्ठा से संविधान का प्रारुप तैयार कर उसे स्वीकारने में एक रचनात्मक योगदान दिया है.

सभी मिलकर: जय भारत!

प्रभु तेरा धन्यवाद हो कि इस संविधान ने हमें एक गौरवशाली राष्ट्र और जागरूक नागरिक बनाया है. 68 वर्ष पहले 26 नवम्बर 1949 को इसे स्वीकार कर हमने इसे भावना और शब्द्ह: परिपुष्टि और संपोषित करने का संकल्प लिया.

सभी मिलकर: जय भारत!

भजन: तू ही दाता,विश्व्दिधाता, तेरी महिमा सारी,
कैसा यह इंसान बनाया, शान तेरी है न्यारी.

१. ऊँचे पर्वत गहरे सागर सूरज चाँद सितारे,
बादल आयें मेह बरसायें कुदरत की बलिहारी.

२. हम्द-ओ-सना हम मिल गायें तेरा शुक्र करें,
बुलबुल गाये झूमे डाली नाचे धरती सारी.

३. हाथों को जोड़े, दिल को खोले, आये हैं शरण तेरी,
पापों को प्यारे प्रभु क्षमा कर जान मेरी यह पुकारे.

(एहसान मसीह)

पाप अंगीकार:

लोग: कृपालु और दयालु परमेश्वर, आपका अगापे-प्रेम (जो यीशु ख्रीस्त के व्यक्तित्व में प्रगट होता है, जो हमारा परमेश्वर, मुक्तिदाता और बचाने वाला है), हमें अपने घुटनों के बल चुकने को प्रेरित करता है कि हम अपने पापों को अंगीकार करें जो हमने आपके खिलाफ, आकी सृष्टि के खिलाफ, अपने पड़ोसियों के खिलाफ, और अपने स्वम के खिलाफ किये हैं. इस कारण हम आपसी मेल-मिलाप और सद्भावना से दूर हो गए हैं, और पाप ने हमें एक दूसरे से अलग कर दिया है. हमने आपकी उस आज्ञा का पालन नहीं किया "तुम अपने पडोसी से अपने सामान प्रेम रखो", और इसके चलते हम स्वतंत्रता और समानता और न्याय और शांति के मूल्यों को अपने परिवार और समाज में संपोषित करने में विफल रहे हैं. हमारी उदासीनता और स्वत:केन्द्रित जीवन जीने के लिए माफ़ करें. एक अच्छे पडोसी की भांति एक दुसरे के साथ मिलजुलकर और प्रेम से जीवन जीने के लिए हमें चंगाई बक्श दें और प्रेरित करें ताकि हम एक दुसरे की गरिमा और स्वतंत्रता का सम्मान और सुरक्षा कर सकें.

मौन धारण करें.

लोग: सरनम, सरनम, सरनम;
यीशु मुक्तिदाता परमेश्वर, रेरे पास उड़ कर मैं आता हूँ;
तो मेरी चट्टान है, मेरा शरणस्थल है जो मुझसे भी ऊँचे स्थान पर है;
सरनम, सरनम, सरनम.

अगुवा: अगापे-परमेश्वर हमें क्षमा करें, हमारी कमजोरियों के लिए, हमारी सीमाओं के लिए, हमारी दुर्बलता के लिए, हमारे पापों के लिए, और हमें चंगाई बक्शें और हमारी मदद करें कि हम एक ऐसा जीवन जीयें जो हमारे पड़ोसियों और परमेश्वर को स्वीकारयोग्य हो.

अगुवा: अमीन! अमीन!

हे हमारे स्वर्गिक पिता,
तेरा नाम पवित्र माना जाये
तेरा राज्य आये,
तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है,
वैसे पृथ्वी पर भी हो.
हमें आज उतना भोजन दे
जो हमारे लिए आवश्यक हो.
हमारे अपराध क्षमा कर, जैसे हम
दूसरों के अपराध क्षमा करते हैं.
हमारे विशवास को मत परख, वरन शैतान से हमें बचा.
क्योंकि राज्य, पराक्रम और महिमा
सदा तेरे ही हैं, आमीन.

भजन: आवाज़ उठाएंगे, हम साज़ बजायेंगे,
हे येशु महान अपना यह गीत सुनायेंगे.

१. संसार की सुन्दरता मैं यह रूप तो तेरा ही,
इन चाँद सितारों में है अक्स भी तेरा ही,
महिमा की तेरी बातें हम सबको बताएँगे.

२. दिल तेरा खज़ाना है एक पाक मोहब्बत का
थाह पा न सके कोई सागर है तू उल्फत का,
हम तेरी मोहब्बत से दिल अपने सजायेंगे.

३. न देख सका हमको तू पाप के सागर में,
और बनके मनुष्य आया आकाश से सागर में,
मुक्ति तू दाता है दुनिया को बताएँगे.

(एहसान मसीह)

बाइबल पठन: अ) **पुराना नियम:**
ब) **भजन संहिता:** 144:12-15
स) **नया नियम:**
i) रोमियों की पत्री : 12:2,9-18
ii) मत्ती का सुसमाचार : 5:3-10; 13-16

मनन-चिंतन: मूल विषय: न्याय और शांति साथ-साथ चलते हैं

भजन: वरो प्रभु! हम तो यह वरदान, करें हम मातृ-भूमि सम्मान.

1. कपट कलह को हम सब छोड़ें, द्वेश्राग से नाता तोडें,
   प्रेम नेम से मुख नहीं मोडें, करें आत्म उत्थान.

2. दुर्गुण को हम दूर भगावें, सतगुण को हम्दंथ लगावें,
   धर्म भाव औ बुद्धि बढ़ावें, भरें ह्रदय में ज्ञान.

3. दींन दुखी के बनें सहारा, बीमारों की जीवनधारा,
   परस्वार्थ हो धर्म हमारा, रखें यही हम बान.

4. सदा देश का कलह निवारे, देश-दशा को शीघ्र सुधारें,
   देशौन्नती में सब कुछ वारें-वरें देशहित प्राण.

(जे. दत्त)

अगुवा: आइये हम भारत के संविधान की उद्देशिका को एक साथ पढ़ें:

हम, भारत के लोग, भारत को एक
संपूर्ण प्रभुत्वसंपन्न समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य
बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को:
सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता, प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सबमें, व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित कराने वाली, बंधुता बढ़ाने के लिए,
दृढ़ संकल्प होकर अपनी संविधानसभा में आज तारीख 26 नवम्बर 1949 ईस्वी
को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

मौन .....प्रार्थना और धन्यवादी मुद्रा में.

अगुवा: जीवन और जीविकौपर्जन के परमेश्वर, आजादी और माफ़ी देने वाले परमेश्वर, हमारी मदद करें कि हम अपने संविधान में निहित आजादी, जनतंत्र, न्याय और समानता के सिद्धांतों को निष्ठा से संपोषित कर सकें. भारत के नागरिकों को एक ऐसा देश बनाएं जहाँ दूध और शहद की नदियाँ बहती हों; जहां दाल-रोटी सब को मिले, और साथ ही शांति और समृद्धि का राज्य स्थापित हो.

अगुवा: जीवन और प्रेम का परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनें, और एक ऐसे भारत राष्ट्र के निर्माण में हमारी मदद करें जहाँ सभी नागरिकगण भाईचारे-बहनापे के वातावरण में जीवन-यापन करें, हाथ-में-साथ पकड़ कर सहयात्री के रूप में चलें, और कंधे-से-कन्धा मिलकर काम करें.

लोग: प्रभु-परमेश्वर, हमें इस संसार में एक दूसरे की सेवा करने के लिए भेज, और भारत के संविधान की सुरक्षा और उसे संपोषित करने के लिए प्रेरित कर.

अगुवा: शांति के साथ जाओ, और प्रभु-परमेश्वर, देश और लोगों की सेवा करो.

लोग: शांति!शांति! शांति!

****

इस आराधना विधि को रेव्ह. डॉ.सतीश चन्द्र ज्ञान ने तैय्यार किया है, जो एक जाने-माने धर्म-वैज्ञानिक हैं; स्टूडेंट क्रिस्चियन मूवमेंट ऑफ़ इंडिया के पूर्व महासचिव; रायपुर चर्चेस डेवलपमेंट एवं रिलीफ समिति के पूर्व महानिदेशक/महासचिव हैं.

रायपुर चर्चेस डेवलपमेंट एवं रिलीफ समिति

यू.सी.एन.आई.टी.ए. प्रांगण,

महासमुंद – 493-445: छत्तीसगढ़

इ-मेल: <rcdrc.cc14@rediffmail.com>